प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई कक्षाओं के लिए कार्यनीतियाँ)

बच्चे जिन्हें ज़रूरत है अधिक देखभाल और अवसरों की

सुजाता रावी और दसन्ना मरेड्डी

3 से 6 साल के बच्चे अलग-अलग जगहों पर साथ में खेलते और सीखते हैं। ख़ासकर प्री-स्कूल और अपने आस पड़ोस में। यही वो समय है जब वे सकारात्मक दृष्टिकोण से एक दूसरे के बीच के अन्तर को समझने का प्रयास करते हैं।

जब हमने पहली बार तेलंगाना के संगारेड्डी ज़िले में आँगनवाड़ियों के साथ काम करना शुरू किया, हमने कक्षा में बहिष्करण के कई उदाहरण देखे। विशेषकर, उन बच्चों के सम्बन्ध में जिनके सीखने और संवर्धन की गति धीमी होती थी। ये बच्चे अकसर अकेले बैठे रहते थे, उन्हें अपना काम पूरा करने में परेशानी होती थी, उनका ध्यान बड़ी आसानी से बँट जाता था, और उनमें इधर-उधर घूमने की प्रवृत्ति दिखाई देती थी। आँगनवाड़ी शिक्षकों को उन्हें गतिविधियों में शामिल करना मुश्किल लगता था क्योंकि इसमें अधिक समय और प्रयास लगता था। दूसरे बच्चे भी उनके साथ खेलने में रुचि नहीं रखते थे। इससे इन बच्चों के लिए नियमित रूप से आँगनवाड़ी आना और सीखने में रुचि बनाए रखना मुश्किल हो गया। हालाँकि ऐसे बहुत कम बच्चे थे जिन्हें अतिरिक्त मदद की ज़रूरत थी, लेकिन अलग रखे जाने की वजह से उन्हें अपने बारे में बुरा महसूस होता, उनके आत्मसम्मान को चोट पहुँचती, और सीखने में उनकी रुचि कम हो जाती थी। वे कभी-कभी दूसरों का ध्यान भटकाकर या उनके साथ मारपीट करके ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करते थे। उपेक्षित और अकेला महसूस करने से न केवल बच्चे को समस्या होती है, बल्कि कक्षा का प्रबन्धन करने में शिक्षक को भी कठिनाई होती है।

विकास के सिद्धान्तों के बारे में जागरूकता

इस समस्या से निपटने के लिए, हमने अपने आँगनवाड़ी शिक्षकों को इस बारे में जागरूक करना शुरू किया कि बच्चे कैसे व्यवहार करते हैं; कक्षा में सभी को शामिल करना कितना महत्त्वपूर्ण है; और माता-पिता को भी इन चीज़ों के बारे में क्यों सीखना चाहिए। हमने कार्यशालाएँ आयोजित कीं। यहाँ हमने ख़ास मामलों और स्थितियों का उदाहरण दिया, और शिक्षकों से पूछा कि वे कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि सभी बच्चे, विशेषतौर पर वे जिन्हें अतिरिक्त मदद की ज़रूरत है, शामिल हो सकें। जब हम आँगनवाड़ियों में गए तो हमने उन शिक्षकों की भी मदद की जो अपनी कक्षाओं में सभी बच्चों को शामिल करने के लिए काम कर रहे थे। शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में समावेशन के अर्थ को समझने और उसे अमल में लाने में कुछ समय लगा।

जब शिक्षक बाल विकास के सिद्धान्तों से परिचित हो गए तब उन्होंने महसूस किया कि प्रत्येक बच्चा अपनी गति से विकसित होता है, और सीखता है। उन्होंने यह भी समझा कि असल में घर के माहौल का बच्चे के सीखने के तरीक़े पर प्रभाव पड़ सकता है। किसी बच्चे को 'धीमी गति से सीखने वाला' कहने की बजाय, उसकी मदद करना बेहतर होता है। ऐसा करने के लिए शिक्षकों को इसके कारणों का विश्लेषण करना होगा, और उस बच्चे की पृष्ठभूमि को समझना होगा।

शिक्षकों ने बच्चों के विकासात्मक पड़ावों (डिवैलपमेंटल माइलस्टोन) और आयु के बारे में अपनी जागरूकता बढ़ाई। उन्होंने बच्चों के लिए विकासात्मक रूप से उपयुक्त अवसरों को भी समझा जिससे उन्हें प्रत्येक बच्चे की विकासात्मक प्रगति को समझने में मदद मिली। इस समझ के साथ शिक्षक उन बच्चों की पहचान कर सके जिन्हें सीखने और विकसित होने के लिए अधिक समय और अवसरों की आवश्यकता होती है। शिक्षकों ने अपने शिक्षण के तरीक़ों को बेहतर किया, और साथ ही वे यह भी सुनिश्चित करने लगे कि इन बच्चों को सभी गतिविधियों से सीखने के पर्याप्त अवसर मिलें। मसलन, एक संवाद गतिविधि में यदि कोई बच्चा अकेला बैठा है, और समूह गतिविधि के दौरान बात नहीं कर रहा है तो शिक्षिका सुनिश्चित करती हैं कि वे बच्चे पर नज़र रखें, और बच्चा दूसरे बच्चों की प्रतिक्रियाओं

चित्र 1 : शिक्षिका की मदद से किताब पढ़ने की कोशिश करते बच्चे

चित्र 2 : खेल के दौरान अपनी बारी का इन्तज़ार करते बच्चे

> एक संवाद गतिविधि में यदि कोई बच्चा अकेला बैठा है, और समूह गतिविधि के दौरान बात नहीं कर रहा है तो शिक्षिका सुनिश्चित करती हैं कि वे बच्चे पर नज़र रखें, और बच्चा दूसरे बच्चों की प्रतिक्रियाओं को सुने।

को सुने। कभी-कभी वे इन बच्चों से पूछती हैं कि क्या वे कोई प्रश्न पूछना चाहते हैं, या अपनी ओर से कुछ कहना चाहते हैं। फिर वे बच्चे को जवाब देने के लिए कुछ समय देती हैं। बिना कोई दबाव डाले वे उसे ऐसे अवसर देती रहती हैं। धीरे-धीरे बच्चा समूह के साथ बैठना और बातचीत में भाग लेना शुरू कर देता है।

जब शिक्षक बच्चों के घर जाते हैं, या हर महीने ईसीसीई दिवस पर अभिभावकों के साथ बैठक करते हैं तो वे उन्हें इस बात की जानकारी देते हैं कि घर के माहौल को प्रेरक बनाने, और बच्चे को सीखने व विकसित होने में मदद करने के लिए उन्हें घर पर किस प्रकार के बदलाव करने चाहिए।

इस लेख में हम दो केस स्टडी प्रस्तुत कर रहे हैं, जहाँ आँगनवाड़ी शिक्षकों ने उन बच्चों के लिए समावेशी पद्धतियों का प्रयोग किया जिन्हें अधिक मदद की ज़रूरत थी।

केस स्टडी 1

जब 2 साल के एक बच्चे के माता-पिता को पता चला कि उनके बच्चे को विशेष ध्यान और अवसरों की आवश्यकता है क्योंकि उसे अपने रिफ़्लैक्सेस और अपनी बात कहने, अपनी बातचीत (expressive communication) को नियंत्रित करने, और अपनी बात को कहने में मुश्किल होती है। वह चीज़ों को छीनता है, और दूसरों को धक्का दे देता है। माता-पिता अपने बच्चे को किसी प्री-स्कूल में भर्ती कराना चाहते थे, जहाँ वह खेल सके और दूसरे बच्चों के साथ बातचीत कर सके, लेकिन बच्चे की स्थिति के बारे में जानने के बाद कोई भी निजी प्री-स्कूल उसे भर्ती करने के लिए तैयार नहीं था, जबकि उसकी माँ स्कूल में शिक्षिका के साथ रहने के लिए तैयार थीं। फिर माँ ने नज़दीक की एक आँगनवाड़ी शिक्षिका से सम्पर्क किया, और उन्हें आश्वासन दिया कि वह इस बात का ध्यान रखेंगी कि उनका बच्चा दूसरे बच्चों को चोट न पहुँचाए। शिक्षिका ने एकीकृत बाल विकास सेवा पर्यवेक्षक से बात की। उन्होंने स्थिति को समझा, और उसे भर्ती कर लिया ताकि वह दूसरे बच्चों के साथ खेल सके और सीख सके।

शुरू में, इस बच्चे को अपनी दैनिक गतिविधियों में शामिल करने में शिक्षिका और दूसरे बच्चों को मुश्किल हुई। लेकिन फिर उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया कि बच्चा कैसे व्यवहार करता है, और आँगनवाड़ी सहायिका व बच्चे की माँ की मदद से उन्होंने उसे धैर्यपूर्वक हर गतिविधि में शामिल करना शुरू कर दिया। पहले बच्चे की माँ को हर समय उसका हाथ थामे रहना पड़ता था। धीरे-धीरे, दूसरे बच्चों को देखकर यह बच्चा भी उनके साथ खेलने और बात करने लगा। अब वह दूसरे बच्चों के साथ कॉर्नर प्ले में भाग लेता है, आकृतियों व रंगों की पहचान करता है, अपनी ज़रूरतों को बताता है, और दूसरे बच्चों को उनके नाम से पहचानने लगा है।

उपरोक्त उदाहरण में, हालाँकि शिक्षिका अलग तरह का व्यवहार करने वाले बच्चों की मदद करने की विशेषज्ञ नहीं थीं, फिर भी उन्होंने अन्य जानकारों की सलाह से अपनी ओर से पूरी कोशिश की। उन्होंने पहले इस बच्चे को दूसरे बच्चों के साथ शामिल करने की कोशिश की, लेकिन उन्हें एहसास हुआ कि इस तरह तो वे समय का सही प्रबन्धन नहीं कर पाएँगी क्योंकि बच्चे पर अतिरिक्त ध्यान देने की ज़रूरत है। ऐसे में, उसे काम में व्यस्त रखने और गतिविधियों में शामिल करने के लिए उन्हें बहुत धैर्य रखना होगा। इसलिए उन्होंने अपनी गतिविधियों और समय की योजना इस तरह से बनानी शुरू की कि बच्चे पर पर्याप्त ध्यान दिया जा सके। दूसरे बच्चों ने भी अपनी बारी का इन्तज़ार करना और अपने दोस्त का उत्साह बढ़ाना सीखा। उन्होंने ऐसा माहौल बनाया जहाँ बच्चे को लगे कि उसे स्वीकारा जा रहा है, उसका सम्मान हो रहा है, और जहाँ वह ख़ुद को महत्त्वपूर्ण महसूस करे। बच्चे को मुख्यधारा में लाने की इस प्रक्रिया में उसकी माँ का सहयोग महत्त्वपूर्ण था। वह घर पर विभिन्न सामग्रियों का इस्तेमाल करके उसे अलग-अलग गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करती हैं, और उसकी सहायता करने के लिए शिक्षण रणनीतियाँ सीखती रहती हैं।

केस स्टडी 2

आँगनवाड़ी की एक शिक्षिका को 4 साल के बच्चे को कक्षा की गतिविधियों में शामिल करना मुश्किल लगा क्योंकि वह सभी गतिविधियों में अरुचि दिखाता था। वह बेहद उदास व ऊबा हुआ-सा लगता था। सर्कल समय और समूह गतिविधियों के दौरान भी उसे विचारों को समझने में काफ़ी समय लगता था, और वह शायद ही कभी दूसरे बच्चों के साथ खेलता था। कक्षा के दौरान उस बच्चे के सीखने के पैटर्न, व्यवहार और अनुक्रियाओं को ध्यान से देखकर शिक्षिका समझ गईं कि इसपर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

शिक्षिका ने कक्षा के पूरे दिन के कार्यकलापों में बड़ी, छोटी और व्यक्तिगत निर्देशात्मक गतिविधियों में सन्तुलन बनाए रखने पर ध्यान देना शुरू किया। इससे शिक्षिका को बच्चे से अधिक बार बातचीत करने, मदद करने और मार्गदर्शन करने के अवसर मिले। छोटे समूह की गतिविधियों के दौरान उन्होंने बच्चों को एक दूसरे का सहयोग करके कार्यों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया। इससे वह बच्चा ख़ुश हो गया कि उसने भी बाक़ी बच्चों के साथ मिलकर छोटी-छोटी सफलताएँ हासिल की हैं। शिक्षिका ने सर्कल समय के दौरान 'उत्तर देने से पहले एक पल रुकें' का तरीक़ा अपनाना शुरू किया। इससे बच्चे को सोचने और उत्तर देने का समय मिला। उन्होंने बच्चे की प्रगति पर नज़र रखना शुरू किया, और उन क्षेत्रों की पहचान की जिनपर अधिक ध्यान देने की ज़रूरत थी। इसके साथ ही, शिक्षिका ने घर पर बच्चे की सीखने की आदतों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उसके माता-पिता के साथ बातचीत जारी रखी, और उसकी रुचियों के अनुसार शिक्षण रणनीतियों को समायोजित किया। शिक्षिका ने उसकी छोटी-छोटी उपलब्धियों को पहचाना और उनकी प्रशंसा की। इससे बच्चे का आत्मसम्मान बढ़ा, और उसे सीखना जारी रखने की प्रेरणा मिली। इन सभी प्रयासों से अब वह गतिविधियों में भाग लेने के लिए उत्सुक रहता है, साथियों के साथ ख़ुशी-ख़ुशी बातचीत करता है, और खेलता भी है।

ऐसे बच्चों, जिनको सीखने में कठिनाई होती है, के शुरुआती वर्षों में शिक्षा में उनकी सक्रिय भागीदारी और पालन-पोषण करने के लिए संवेदनशीलता, धैर्य और समर्पण की ज़रूरत होती है। हर बच्चे की यात्रा अलग और अनूठी होती है। चुनौतियों से उबरने और अपनी क्षमता हासिल करने के लिए उन्हें व्यक्तिगत मार्गदर्शन और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। यह शिक्षक के लिए एक बड़ी चुनौती है क्योंकि उन्हें भी अपनी क्षमता बढ़ाने और प्रेरित बने रहने में निरन्तर सहयोग की आवश्यकता होती है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

सुजाता रावी तेलंगाना के संगारेड्डी में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में ब्लॉक समन्वयक हैं। वे अन्य राज्यों में आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के क्षमता-निर्माण, बच्चों के आकलन और प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) विस्तार के लिए पाठ्यक्रम और कोर्स बनाने वाली टीम में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : raavi.sujatha@azimpremjifoundation.org

दसन्ना मरेड्डी तेलंगाना के संगारेड्डी के पटनचेरू ब्लॉक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के फ़ील्ड वर्क का समन्वय करते हैं। शुरुआती 2 वर्ष इंजीनियरिंग क्षेत्र में काम करने के बाद पिछले 10 सालों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : dasanna.mareddy@azimpremjifoundation.org